International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

''इण्टरमीडिएट में अध्ययनरत् सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों की समायोजन समस्या का तुलनात्मक अध्ययन''

डा0 गीता
प्रवक्ता (शिक्षा विभाग)
श्री राम इन्स्टीटयूट ऑफ एजूकेशन,बागपत रोड़,मेरठ।

सारांश–

प्रस्तुत शोध पत्र में इण्टरमीडिएट में अध्ययनरत सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों की समायोजन समस्या का तुलनात्मक अध्ययन" किया गया है, इस शोध पत्र का उद्देश्य ये देखना और जानना है, क्या सृजनात्मक बालक एवं पिछड़े बालक अपनी विशेषताओं के कारण विद्यालय में समायोजन कर पाते हैं या नहीं? क्योंकि सृजनात्मक बालकों की मानसिक क्षमताएँ और योग्यताएँ सामान्य बालकों की अपेक्षा अधिकतम होती हैं। उनमें सूझ बूझ की शक्ति, तर्क वितर्क, क्षमता, कल्पना की शक्ति और स्मरण शक्ति तथा सृजनात्मक क्षमता आदि सामान्य बालकों की अपेक्षा कहीं अधिक होती है। प्रत्येक कार्य को करने और नए कार्य को सीखने में सृजनात्मक बालक सामान्य बालक की अपेक्षा कम समय लेते हैं। अतः वे घर, विद्यालय तथा समाज में समायोजन की समस्या का सामना करते हैं जिस कारण विद्यालय के साथ समायोजन नहीं कर पाते है और उनकी सीखने की गति भी धीमी पड़ जाती है, अर्थात सृजनात्मक बालकों की योग्यताओं और प्रगति में अनुपात का संतुलन नहीं रह पाता है। दूसरी और पिछड़े बालक जो अपनी कक्षा से एक या दो साल पीछे रहते है, उनके सीखने की गति अन्य बालकों की तुलना में कम होती है। शैक्षिक उपलब्धि सामान्य या औसत से कम होती है। क्या ये बालक भी घर, विद्यालय तथा समाज में समायोजन कर पाते है या नहीं ? इन्ही प्रश्नो के उत्तर प्राप्त करने के लिए शोध समस्या का चुनाव किया गया।

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य ''इण्टरमीडिएट में अध्ययनरत सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों की समायोजन समस्या का तुलनात्मक अध्ययन'' करना है शोध के निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति हेतु आंकड़े एकत्रित करने के लिए मेरठ मंडल के इण्टरमीडिएट में अध्ययनरत सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों को लिया गया जिनको उनकी शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर वर्गीकृत किया गया है इन सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों को इस अध्ययन की जनसँख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है ,एवं प्रतिदर्श के रूप में यादृच्छित विधि से मेरठ जनपद के 5 विद्यालयों का चयन किया गया है इन विद्यालयों के इण्टरमीडिएट में अध्ययनरत बालकों को उनकी शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर वर्गीकृत कर सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों की इस जनसँख्या में से 30 सृजनात्मक एवं 30 पिछड़े बालकों का चयन किया गया है। चयनित समूह के इण्टरमीडिएट में अध्ययनरत बालकों की समायोजन समस्या को मापने के लिए ए० के० सिंह और ए० सेन गुप्ता की इण्टरमीडिएट एडजस्टमेंट इन्वेंटरी का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त परिणामो के आधार पर ये ज्ञात हुआ कि चयनित दो समूह घर तथा संवेगात्मक क्षेत्र की समस्या को छोड़कर अन्य किसी भी क्षेत्र की समस्या में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है ।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

प्रस्तावना

विद्यालय समाज का एक लघु रूप है जिसमें हर समाज, हर वर्ग तथा भिन्न–भिन्न परिवारों के बालक अध्ययन करते हैं हर बालक का उसके पारिवारिक, सांस्कृतिक, परंपरा, रीति–रिवाज एवं पारिवारिक परिवेश के अनुरूप बुद्धि, व्यक्तित्व संवेगात्मक एवं विचार प्रवृत्ति का विकास होता है विद्यालय में आने के उपरांत एक ही कक्षा में अन्य बालकों के साथ समायोजित होकर एक ही शिक्षक से एक समय सीमा में अपने ज्ञान का वर्धन एवं व्यक्तित्व का विकास करते हैं। एक कक्षा के अंतर्गत विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि तथा शैक्षिक योग्यता के आधार पर कई प्रकार के विधार्थी होते है जैसे सामान्य, सृजनात्मक तथा पिछड़े बालक आदि ।

सामान्य बालक वे होते है जिनका शारीरिक स्वास्थ एवं बनावट इस प्रकार की होती है कि उन्हे सामान्य कार्य करने मे किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव नही होता है। जिनकी बुद्धि लब्धि औसत (90 से 110) के बीच होती है। ऐसे बालकों की शैक्षिक उपलब्धि कक्षा में सामान्य होती है। परन्तु कुछ बालक ऐसे होते है जो इस सामन्य श्रेणी से या तो ऊपर की ओर होते है या नीचे की ओर होते है अथार्त बालक या तो अत्यधिक बुद्धिमान, सृजनात्मक और असमान्य रूप से उत्कृष्ट व्यक्तित्व वाले होते है या फिर ये बालक सामन्य बालक से पिछड़े होते है जो शारीरिक, मानसिक, शैक्षिक एवं सामाजिक गुणो की
दृष्टि से अन्य बालको से भिन्न होते है। जो कक्षा में किसी तथ्य को बार–बार समझाने पर भी नही समझते हैं और औसत बालकों के समान प्रगति नहीं कर पाते हैं। इनकी बुद्धिलब्धि सामान्य हाने पर भी इनकी शैक्षिक उपलब्धि कम होती है।

सृजनात्मक बालक वे बालक होते है जिनकी बौद्धिक क्षमताएँ सामान्य बालको की अपेक्षा अधिक होती है। ये जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे विशिष्ट प्रदर्शन करते है। टरमेन के अनुसार ऐसे बालकों की बुद्धिलब्धि 140 से ऊपर होती है। प्रतिभशाली एवं पिछड़े बालकों की विशेषताओं के आधार पर सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों की शिक्षा एक आसान कार्य नहीं है , क्योंकि यह संख्या में कम होते है अतः पूरे समूह पर किसी एक प्रणाली को लागू करना कठिन कार्य है। क्योंकि सृजनात्मक बालकों की मानसिक क्रियाएं सामान्य बालकों से अधिक तीव्र होती हैं। कक्षा में साधारण ज्ञान या साधारण शिक्षण विधियों से वे संतुष्ट नहीं होते है। वह अध्यापकों से कुछ विशेष प्रकार के ज्ञान और शिक्षण की आशा करते हैं। सृजनात्मक बालक को यदि कक्षा के कार्य में कुछ उत्कृष्ट नहीं मिलता तो वह कक्षा से भागने लगते हैं। या मन मारकर कक्षा में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बैठे रहते है अध्यापक के प्रति उसका रवैया उचित नहीं रहता है। ऐसे बालकों को स्वयं की प्रशंसा सुनने की आदत पड़ जाती है। कई बार सृजनात्मक बालकों की परिवार तथा समाज के द्वारा मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती और माता–पिता इस स्थिति में नहीं होते कि वह सभी आवश्यकताएं पूरी कर सके। माता–पिता उनकी रुचियों की ओर ध्यान नहीं देते हैं। वह उनके साथ बहुत छोटे बच्चों जैसा व्यवहार करते हैं। ऐसे वातावरण में बालको और उनके माता–पिता में द्वंद की स्थिति बनी रहती है। वह घर में स्वयं को कुसमायोजित अनुभव करते हैं। उनके इस कूसमायोजन का प्रभाव घर से बाहर के समायोजन पर भी पड़ता है। जैसे समाज में, उनकी आयु स्तर के बालक उनके साथ खेलते नहीं, उनकी रूचियों के अनुसार उन्हें मित्र नहीं मिलते, या उनको दूसरे बालकों की आदतें पसंद नहीं आती है। कई बार बालक दूसरे समुदाय में रहता है जहां पर रीति रिवाज भिन्न होते हैं। समाज में समायोजन की समस्या का प्रभाव अन्य क्षेत्रों के समायोजन पर भी पड़ता है। जैसे इनके संवेगात्मक तथा स्वास्थ्य पर भी, इनमे सृजनात्मक बालकों की इस प्रकार की प्रवृत्ति से अन्य सामान्य बालकों का व्यवहार उनके प्रति द्वेष पूर्ण हो जाता है। ऐसे वातावरण में सृजनात्मक बालक स्वयं भी कुसमायोजन अनुभव करते हैं। दूसरी तरफ पिछड़े बालक जो अपनी उम्र के अन्य बालकों के साथ सामान्य गति से विकास नहीं कर पाते हैं। ऐसे बालक सीखना तो चाहते हैं मगर उनके सीखने की गति अन्य बालकों की तुलना में कम होती है। ऐसी स्थिति में सहपाठी कक्षा में मजाक उड़ाते हैं जिससे बालकों में संवेगात्मक एवं व्यवहार सम्बंधी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। बालक अधिक चिंतित एवं तनावग्रस्त होते जाते हैं, वे सही गलत को आसानी से नहीं समझ पातें हैं। जिनकी वजह से इनकी मूल आवश्यकताएँ जैसे प्यार, सामाजिक स्वीकृति, पहचान आदि पूरी नहीं हो पाती, जो इनके सीखने, समझने की प्रेरणा को बहुत कम कर देती है। पिछड़े बालक को कई बार पारिवारिक सामाजिक वातावरण और विद्यालयी वातावरण उस तरह नहीं मिल पाता जिस तरह उनको मिलना चाहिए। सही समय पर उनके मानसिकता को न समझ पाने से माँ बाप भी उसके आवश्यकता के मुताबिक मार्गदर्शन नहीं दे पाते हैं। इन कारणों की वजह से सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों में समायोजन की समस्या बनी रहती है। अगर सृजनात्मक एवं पिछडे बालकों पर उनकी समायोजन की समस्या पर यदि उचित ध्यान नहीं दिया गया तो वह शिक्षा में प्रगति नहीं कर पाएंगे हैं। और न ही अपनी स्कूली तथा कॉलेज शिक्षा को समाप्त करके समाज को अपना प्रभावशाली योगदान देने योग्य बन पायेंगे। इसलिए शोधार्थी ने इन सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों के समायोजन में शिक्षकों के स्तर पर गृह स्तर पर एवं

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

समाज के स्तर पर इन बालकों को जिन समस्या का सामना करना पड़ता है ,उनको अपनी शोध पत्र का विषय बनाया गया है। इसलिए यह विषय शोध का एक नया विषय है।

समस्या कथन :–

"इण्टरमीडिएट में अध्ययनरत सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों की समायोजन समस्या का तुलनात्मक अध्ययन"

अध्ययन के उदेश्यः–

"इण्टरमीडिएट में अध्ययनरत सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों की समायोजन समस्या का तुलनात्मक अध्ययन"

परिकल्पनाः–

इण्टरमीडिएट में अध्ययनरत सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों की समायोजन समस्या में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

शोध परिसीमायें :–

1– प्रस्तुत शोध मेरठ मंडल तक ही सिमित रहा।

2–शोध अध्ययन में इण्टरमीडिएट के कक्षा 10 के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है, जिसमे सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों को चिन्हित करने के लिए कक्षा 10 में अध्ययनरत बालकों के नवीं कक्षा के अंतिम परीक्षाओं की शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर 90 प्रतिशत से ऊपर अंक प्राप्त करने वाले बालकों को सृजनात्मक बालक के रूप में चिन्हित किया गया है। तथा 40 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने वाले बालकों को पिछड़े बालक के रूप में सम्मिलित किया गया है ।

शोध विधि :–

प्रस्तुत अध्ययन में विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या :–

प्रस्तुत अध्ययन में मेरठ मंडल के इण्टरमीडिएट में अध्ययनरत कक्षा 10 के समस्त विद्यार्थियों को शोध की जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है ।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आंकड़ों के संकलन के लिए मेरठ मंडल के 5 विद्यालयों को यादृच्छित विधि द्वारा चयनित किया गया है जिसमे से इण्टरमीडिएट में अध्ययनरत कक्षा 10 के 30 प्रतिभशाली एवं 30 पिछड़े

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

बालकों को सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 60 बालकों का चयन किया गया है।

अध्ययन उपकरण :–

1–प्रस्तुत शोध अध्ययन में चयनित समूहों की समायोजन समस्या को आँकने के लिए ए० के० सिंह और ए० सेन गुप्ता की इण्टरमीडिएट एडजस्टमेंट इन्वेंटरी का प्रयोग किया गया है। उपकरण के कारक घर, स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक, विद्यालय है।

अभिकल्प :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल दो अध्ययन समूह होने के कारण एक स्थायी समूह अभिकल्प का प्रयोग गया है।

सारणी

"इण्टरमीडिएट में अध्ययनरत सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों की समायोजन समस्या का तुलनात्मक अध्ययन"

समायोजन के कारक	बालकों का वर्गीकरण	बालकों की संख्या	औसतमान	प्रमाणिक विचलन त्रुटि	टी प्रयोग	सार्थकता का स्तर
गृह	सृजनात्मक बालक	30	17	0.9138	4.379	''सार्थक अंतर है
	पिछड़े बालक	30	13			
स्वास्थ्य	सृजनात्मक बालक	30	16	1.04	1.912	'सार्थक अंतर नहीं है
	पिछड़े बालक	30	14			
सामजिक	सृजनात्मक बालक	30	14			'सार्थक अंतर नहीं है

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

	पिछड़े बालक	30	15	0.866	1.15	
संवेगात्मक	सृजनात्मक बालक	30	15	0.8870	2.25	''सार्थक अंतर है
	पिछड़े बालक	30	13			
विद्यालय	सृजनात्मक बालक	30	14.2	0.8373	0.230	'सार्थक अंतर नहीं है
	पिछड़े बालक	30	14.4			
योग	सृजनात्मक बालक	30	76.2	3.22	1.24	'सार्थक अंतर नहीं है
	पिछड़े बालक	30	69.4			

स्वतंत्रता अंश 58

सार्थकता स्तर '0.05 (2.00) ''0.01 (2.66)

सारणी न०1 के माध्यम इण्टरमीडिएट में अध्ययनरत सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों की समायोजन समस्या का तुलनात्मक विश्लेषणात्मक किया गया है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है की सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों के समायोजन के कारक स्वास्थ्य, सामाजिक, तथा विद्यालय सम्बंधित समायोजन पर प्राप्त आँकड़ों के मध्यमानो में कोई सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि दोनों समूहों के उपरोक्त कारको पर प्राप्त आँकड़ों के मध्यमान के बीच टी० मान क्रमशः 1.912, 1.15, तथा 0.230 प्राप्त हुए प्राप्त टी० मान स्वतंत्रता अंश 58 पर 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 2.00 से कम है तात्पर्य है की दोनों समूहों के बालकों के स्वास्थ्य, सामाजिक तथा विद्यालय समायोजन समान स्तर के है ।

जबकि सृजनात्मक तथा पिछड़े बालकों के गृह समायोजन तथा संवेगात्मक समायोजन कारको पर प्राप्त आँकड़ों के मध्यमान में सार्थक अंतर पाया गया। क्योंकि दोनों समूहों के उपरोक्त कारको पर प्राप्त आँकड़ों के मध्यमान के बीच टी० मान क्रमशः 4.379, 2.25 प्राप्त हुए प्राप्त टी० मान स्वतंत्रता अंश 58 पर 0.05

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सार्थकता स्तर पर सारणी मान 2.00 से ज्यादा है तात्पर्य है की दोनों समूहों के बालको के घर तथा संवेगात्मक तथा समायोजन में सार्थक अंतर पाया गया है।

दोनों समूहो के गृह समायोजन कारक पर प्राप्त आंकड़ों के मध्यमानो के बीच टी० मान 4.379 प्राप्त हुआ जो की स्वतंत्रता अंश 58 के सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.66 से अधिक है। तात्पर्य है की पिछड़े बालकों का समायोजन सृजनात्मक बालकों के समायोजन में निम्न स्तर का पाया गया इसी प्रकार दोनों समूहों के संवेगात्मक, समायोजन कारक पर प्राप्त आँकड़ों के मध्यमानो के बीच के मान 2.25 प्राप्त हुआ जो की स्वतंत्रता अंश 58 के सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी मान 2.00 से अधिक है। परन्तु सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.66 से कम है तात्पर्य है की दोनों समूहों के संवेगात्मक समायोजन में 95 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर है, जिसमे पिछड़े बालकों का संवेगात्मक समायोजन प्रतिभशाली बालकों से निम्न स्तर का है।

सारणी का पुनः अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है की सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों के कुल समायोजन के आँकड़ों के मध्यमानो के बीच सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि दोनों समूहो के कुल समायोजन के आँकड़ों के मध्यमानो के बीच के मान

1.24 प्राप्त हुआ जो की स्वतंत्रता अंश 58 के सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी मान 2.00 से कम है। अतः शून्य

परिकल्पना :– इण्टरमीडिएट में अध्ययनरत सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों की समायोजन समस्या में कोई सार्थक अंतर नहीं है आंशिक रूप से स्वीकृत होती है।

अध्ययन निष्कर्ष :–

अतः उपरोक्त विवेचना के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों के समायोजन कारको में केवल घर तथा संवेगात्मक समस्या को छोड़कर,स्वास्थ्य सामाजिक तथा विद्यालय से सम्बंधित समायोजन की समस्या में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सृजनात्मक बालकों के समायोजन की समस्या के अध्ययन में यह पाया गया कि सृजनात्मक बालकों के समायोजन की समस्या में सबसे ज्यादा समस्या स्वास्थ्य तथा विद्यालय के समायोजन में होती है उसके बाद सामाजिक क्षेत्र में होती है और उसके बाद संवेगात्मक में होती है पिछड़े बालकों की तुलना में

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

सृजनात्मक बालकों का स्वास्थ्य अच्छा रहता है, सृजनात्मक बालकों का विद्यालय में समायोजन सामान्य स्तर का पाया गया है।

पिछड़े बालकों के समायोजन की समस्या का अध्ययन में यह पाया गया कि पिछड़े बालकों की समायोजन की समस्या सबसे ज्यादा सामाजिक तथा विद्यालय के समायोजन में होती है उसके बाद घर,स्वास्थ्य तथा संवेगात्मक के क्षेत्र में होती है। पिछड़े बालकों का भी समायोजन विद्यालय में सामान्य स्तर का रहता है। परन्तु शैक्षिक व् मानसिक दृष्टि से पिछड़े होने कारण वह घर तथा समाज में समायोजन नहीं कर पाते। इस कारण उनमे संवेगात्मक अस्थिरता भी रहती है और स्वास्थ्य सम्बंधित समस्याएँ भी होती है।

सृजनात्मक और पिछड़े बालको में समायोजन की समस्या का तुलनात्मक विश्लेषणात्मक से यह पाया गया कि सृजनात्मक एवं पिछड़े बालको के समायोजन की केवल घर तथा संवेगात्मक समस्या को छोड़कर स्वास्थ्य, सामाजिक तथा विद्यालय से संबधित समायोजन की समस्या में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। तथा सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों के विद्यालय में समायोजन की घर तथा संवेगात्मक समायोजन में विभिन्नता पाई गयी। सृजनात्मक बालकों की तुलना में पिछड़े बालकों का गृह तथा संवेगात्मक समायोजन निचले स्तर का है। क्योंकि उनके जीवन में निराशा हो जाती है। घर में यदि बालकों की आवश्यकताओं और रुचियों का पूर्ण ध्यान नहीं रखा जाता तो इस स्थिति में भी उनमे समायोजन की समस्या होती है।

शैक्षिक निहितार्थ :–

इस अध्ययन के निष्कर्षो का लाभ उठाते हुए विद्यालय प्रशासक के द्वारा सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों के विकास के लिए उपयुक्त साधनों का प्रयोग किया जाये, समय समय पर निर्देशन परामर्श प्रदान किया जाये।

विद्यालय में बालकों के लिए अलग से कक्षाओं की व्यवस्था की जाय जिसमे व्यक्तिगत शिक्षण विधियों और अभिकृत अध्ययन, कम्प्यूटर द्वारा अध्ययन ,सामूहिक शिक्षण,प्रोजेक्ट विधि का प्रयोग किया जा सके। साथ ही सृजनात्मक एवं पिछड़े बालको की समस्या के समाधान से संबधित उचित वातावरण उपलब्ध हो सके। विद्यालय में सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों को शिक्षा के सामान अवसर प्रदान किये जाये इससे उनके रूचि स्तर में सुधार आएगा। अध्यापकों को अनुकूल या हर परिस्थिति में सकारात्मक दृष्टिकोण रखना

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 5, May- 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

चाहिए ताकि बालकों को व्यवसायिक गतिविधियों के लिए प्रेरित कर सके इससे बालकों में स्नेह प्यार प्रिय सहयोग की भावना उत्पन्न होगी ।

अभिभावक शोध परिणाम से लाभ उठाकर सृजनात्मक एवं पिछड़े बालकों के मुलभुत आवश्यकता को पूर्ण करने की कोशिश कर सकेंगे तथा अभिभावक अपने पिछड़े बालकों की हीन–भावना कार्य उपेक्षा व निम्न शैक्षिक उपलब्धि तथा निम्न व्यवसायिक आकांक्षा आदि समस्या को बढ़ावा देने वाले कारको को अपने पारिवारिक वातावरण से दूर कर अपने बालकों के विकास में सहयोग कर सके ।

समाज के लिए सुझाव सृजनात्मक एवं पिछड़े बालको के विकास के लिए उपयुक्त साधनों का प्रयोग किया जा सकेगा समय समय पर निर्देशन परामर्श प्रदान किया जाये.

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1–गुप्ता, एस० पी०, गुप्ता, अल्का,आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन इलाहबाद ,शारदा प्रकाशन पुस्तक भवन।

2– गुप्ता, एस० पी०, अनुसन्धान सदृषिका सम्प्रत्यय कार्यविधि एवं प्रविधि, शारदा प्रकाशन पुस्तक भवन इलाहबाद।

3–भार्गव, महेश,आधुनिक मनोविज्ञान, आगरा राखी प्रकाशन।

4– श्रीवास्तव, डी० एन० अनुसन्धान विधियाँ, साहित्य प्रकाशन आगरा।

5– कुमार,राकेश, सिंह,डॉ आभा –2019 ''बी.पी.एल.ग्रामीण वर्ग के सृजनात्मक बालकों की विशेषताएँ, समस्यायेँ और उनकी शिक्षा व्यवस्था का एक अध्ययन"।

6– मुहम्मद, सुलेमान उच्चतर मनोविज्ञान , मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

7– डॉ पुनीत कुमार ,डॉ किरण गर्ग, विशिष्ट शिक्षा आर लाल प्रकाशन मेरठ।